Vol. I | 28th November 2022 | Monday | Special Edition | Pages-8
The Divine Mission, Faridabad, Haryana

THE DIVINE MISSION
Contributing Towards Humanity

DIVINE विचार VICHAR

From Guruji's Desk!

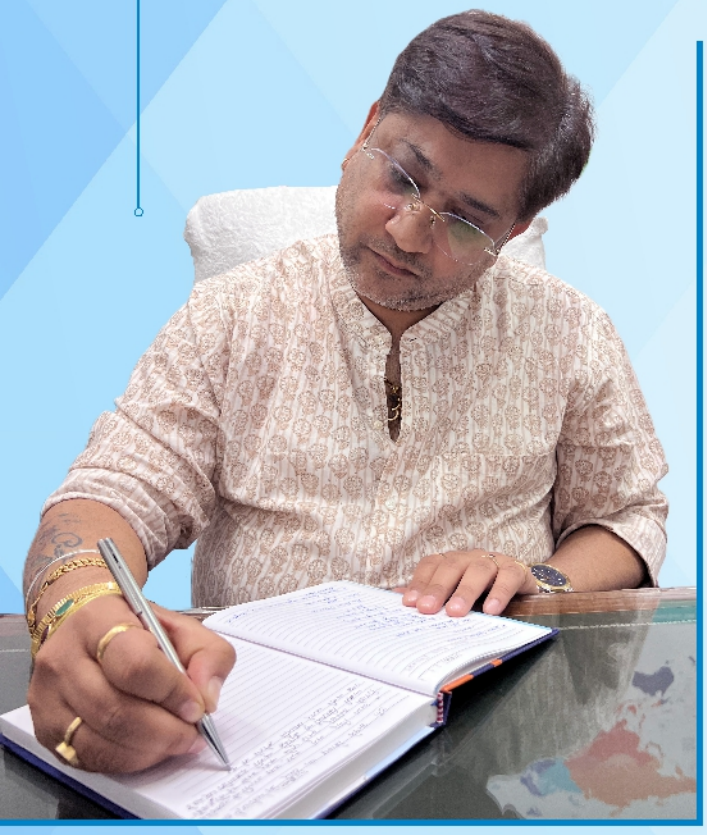

प्रणाम जी,

द डिवाइन मिशन, साल दर साल देश और विदेश में अपनी सेवाओं से अपनी उपस्तिथि दर्ज करा रहा है। निरंतर निस्वार्थ सेवा करते हुए डिवाइन सेवादल, लोगों के जीवन के लिए मूलभूत आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करके उनका सहयोग कर रहा है और समाज को बेहतर बनाने में कई तरह से योगदान दे रहे हैं। मैं मिशन, समाज और लोगों के प्रति आपकी समर्पित सेवा को देखकर अभिभूत हूँ।

कई वर्षों से मैं मिशन का एक समाचार पत्र निकालना चाह रहा था जो ना केवल मिशन के सिद्धांतों, शिक्षाओं, मूल्यों, दृष्टि, दृष्टिकोण और उद्देश्य को उजागर करे बल्कि लोगों को उन विभिन्न गतिविधियों के बारे में भी सूचित करे जो हमने शुरू की हैं या हम निकट भविष्य में करेंगे। आज यह इच्छा पूरी हो रही है और हम डिवाइन मिशन के समाचार पत्र **'डिवाइन विचार'** का पहला संस्करण जारी कर रहे हैं।

हालांकि अभी अपनी भावनाओं को व्यक्त करना बहुत मुश्किल है लेकिन मैं इतना ही कह सकता हूँ कि यह सब पूरी सेवादल की मेहनत है। मैं एक बार फिर इस बात को दोहराना चाहूंगा कि यह मिशन आप सभी का है। आप इसे बनाते हैं, आप इसे चलाते हैं और आप सभी इसके निरंतर भविष्य के लिए जिम्मेदार हैं। इस मिशन में हर कोई समान है और दिल से आने वाले छोटे से छोटे योगदान, तन, मन, धन की सेवा से हमारे मिशन को बल मिलता है।

मिशन द्वारा समय-समय पर शुरू किए गए अच्छे काम के लिए आप सभी की कड़ी मेहनत और समर्पित सेवा का मैं साक्षी हूँ। मिशन के सेवादारों को अपने-अपने क्षेत्र में अपना नाम बनाते हुए, मानवता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए देखकर मेरा दिल गर्व से फूल जाता है। मैं इस अवसर पर सबसे पहले आप सभी को इस मिशन का हिस्सा बनने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ और आप सभी से समाज के प्रति अपना योगदान जारी रखने का आग्रह करना चाहता हूँ।

इस न्यूज़लेटर पर वापस आते हुए, आपको बता दें कि इस न्यूज़लेटर को नाम देने में ही लगभग चार महीने लग गए। हमें कई नामों का प्रस्ताव मिला पर कहीं ना कहीं कुछ कमी लग रही थी। फिर बहुत सोच-विचार के बाद प्रभु कृपा हुई और मैंने संपादकीय टीम को यह नाम सुझाया जिसे पूरे दिल से स्वीकार किया गया। कहने का तात्पर्य ये है के सिर्फ नाम रखने में चार महीने लग गए और फिर ये पूरा न्यूज़लेटर का कंटेंट बनाने में, डिजाइनिंग में समय लगा होगा। इसलिए 'डिवाइन विचार' की आवधिकता आप सभी पर छोड़ता हूँ। यह आप सभी को तय करना है, आपके योगदान के आधार पर हम इसे द्वि-मासिक या त्रैमासिक रूप से निकाल सकते हैं।

मैं चाहता हूँ कि मिशन में आपके अनुभव, आपके विचार, आपकी परिवर्तनकारी यात्रा इस न्यूजलेटर का हिस्सा बने। हम इसमें मिशन द्वारा आयोजित सेवा के कार्यक्रमों के बारे में भी प्रकाशित करेंगे। साथ ही मैं आप सभी से वादा करता हूँ कि प्रत्येक संस्करण में प्रस्तावना के अलावा मेरा एक लेख भी होगा। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ के इस न्यूजलेटर को निरंतर प्रकाशित करने हेतु अपना योगदान ज़रूर दें। इससे हमें अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचने में मदद मिलेगी और उनको सामाजिक कार्यों में शामिल करने का अवसर मिलेगा। जैसा कि कहा जाता है, जब आप मानवता की सेवा करते हैं तो आप ईश्वर की सेवा करते हैं, इसलिए आइए हम सब एक साथ आएं और मानवता के प्रति योगदान दें।

सभी को प्यार एवं आशीर्वाद

गुरूजी

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान। सीस दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान

गुरु और शिष्य का रिश्ता समर्पण के आधार पर टिका होता है। जीवन-समर को पार करने के लिए सद्गुरु रूपी सारथी का विशेष महत्व होता है। शिष्य के लिए तो गुरु साक्षात् भगवान् ही होता है। वह समय-समय पर समुचित मार्गदर्शन कर शिष्य को आगे बढ़ाता रहता है। खासकर आध्यात्मिक सफलता की दिशा में बढ़ना हो तो गुरु का मार्गदर्शन अनिवार्य रूप से लेना पड़ता है। आत्मा-परमात्मा संबंधी ज्ञान गुरु के सहारे ही होता है। पुस्तकें पढ़ कर कोई उपदेशक तो बन सकता है, पर उसमें गहराई तक उतर कर हीरे-मोती निकालने का ज्ञान गुरु ही देता है।

गुरु सर्वदा अपने शिष्य का हित ही करता है। उनके चरणों में समर्पण कर देने के बाद आगे का मार्ग गुरु स्वयं साफ करता है। अर्जुन ने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया तो भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान सुना कर उनका मोह, अज्ञान नष्ट कर दिया। उद्धव को अपने ज्ञान का इतना अहंकार हो गया कि वह अपने आगे सबको तुच्छ समझने लगे। तब श्रीकृष्ण ने उन्हें गोपियों के पास भेज कर भक्ति और समर्पण की शक्ति का महत्व समझाया और उनके ज्ञान के अहंकार को तोड़ा। इस प्रकार अपने शिष्यों में अहंकार बढ़ते देख गुरु सहन कर नहीं पाता, क्योंकि अहंकार बड़ा ही घातक होता है। वह आदमी को पतन के मार्ग पर ले जाता है। गुरु अपने शिष्य को निरहंकार बना कर उसे उत्थान की ओर ले जाता है। सम्पूर्ण समर्पण की स्थिति में सद्गुरु शिष्य की अन्तरात्मा में अपना स्थान बना लेता है तथा वहीं बैठ कर शिष्य का मार्गदर्शन करता है।

अध्यात्म मार्ग में गुरु के सहारे ही प्रगति संभव होती है। गुरु ऐसा पारस है कि शिष्य को अपने से भी श्रेष्ठ बना देता है। गुरु-शिष्य का संबंध एक जन्म का नहीं होता, जन्म-जन्मान्तरों का होता है। वह लौकिक नहीं, अलौकिक होता है। वह स्वार्थ का नहीं, समर्पण और करुणा का गठजोड़ जैसा होता है। गुरु एक ऐसी टकसाल है, जो अपने सांचे में अपने प्राणबल, तपोबल के सहारे प्रखर व्यक्तित्वों का निर्माण करता है। साधारण को असाधारण और तुच्छ को महान बनाता है।

A journey from Humans to Super-Humans!

When we talk about sewa, nothing seems greater than contributing towards saving lives. As we all are aware, Blood is the most essential thing for human life. It is a body fluid that delivers necessary substances such as nutrients and oxygen to the cells.

Human blood cannot be produced through artificial means, as such there is no substitute for it. Every year our nation requires about 5 Crore units of blood, out of which only a meager 2.5 Crore units of blood are available. Did you know, 1 per cent of healthy Indian population can help maintain adequate supply? We at The Divine Mission realise that awareness among the general public about the quantum of blood requirement in the healthcare system needs to be increased. Also, the prejudices attached to Blood Donation needs to be addressed. Therefore, the mission not only ensures organising at least two blood donation camps in a year but also actively propagates about the benefits of blood donation across media to spread awareness and encourage more and more people to participate in this noble cause.

This year, the mission organised Blood donation camps on February 13, 2022 and October 02, 2022. It was overwhelming to witness enthusiastic participation not only from the Mission's sewadal and their families but people from different walks of life came in to contribute towards saving lives. It was an adorable sight, when even the little sewadars (kids) were willing to donate blood and serve humanity.

The learnings that Guruji at The Divine Mission imparts always stresses upon being there for humanity through tan, man aur dhan ki sewa. Unlike other non-profit organisations, any activity at The Divine Mission is organised and managed in-house with the sewadal. Guruji ensures that he participates in every activity and stays through the entire day with the sewadal during the event. His care and concern for the sewadal can be seen when he insists on every member of The Division Mission to have langar prasad with him before they leave for the day.

It is not once but many times that the mission has received compliments from higher authorities, people of prestige, government officials that the camps organised by the mission are well managed and maintained. The hygiene levels are top notch and the care offered is unparalleled.

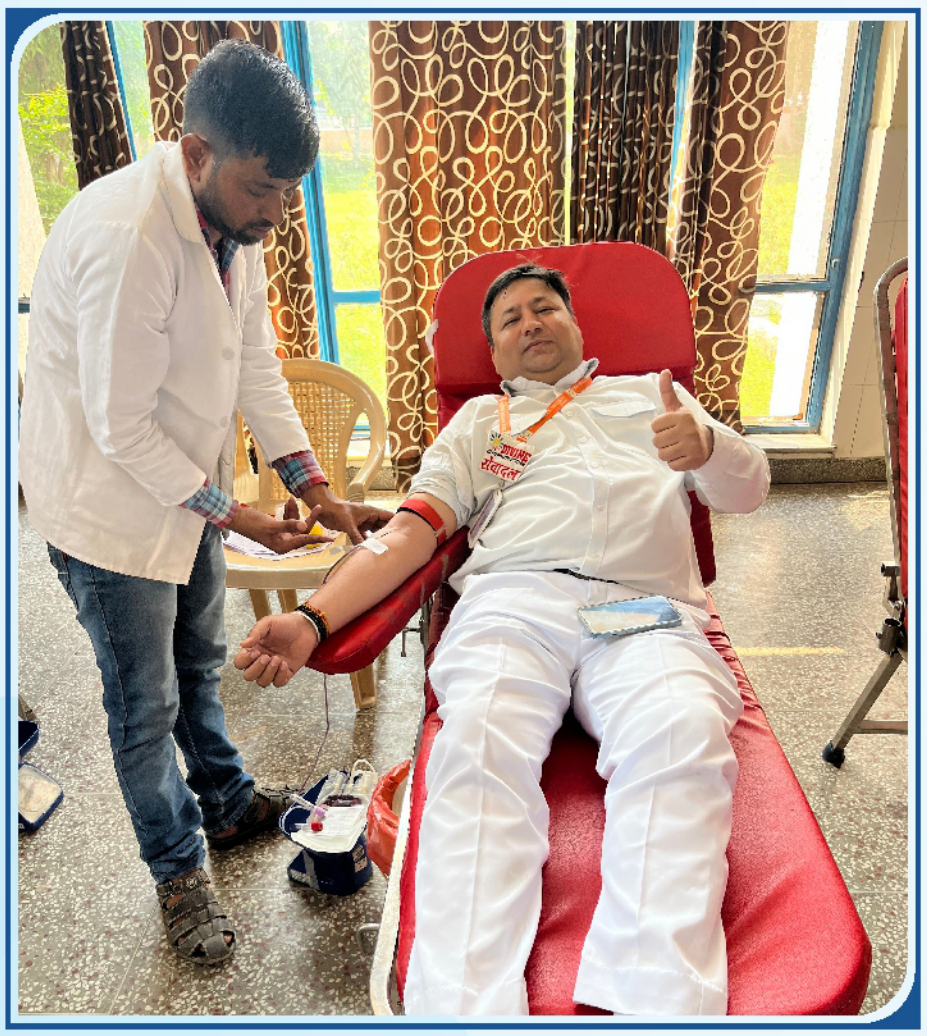

Inculcating the spirit of serving all with love!

India was grappling with the second wave of Covid-19 pandemic, the cases had somehow gone a bit stable when Guruji announced 'Guru Ka Langar' as a novel concept of Langar sewa which would be a regular sewa at the mission. The sewa was announced by Guruji on July 06, 2021, where he urged the sewadal and members of The Divine Mission to contribute one spoon of food grains from every meal they prepare. He urged everyone to keep small containers in the kitchen for flour, pulses, sugar, oil/ghee, tea-powder, rice etc. and while preparing the food, a small portion can be set aside while chanting the mission prayer 'Simran'. This would invoke a feeling of love, belongingness, and gratitude towards the almighty. The food prepared with this feeling will have divine blessings.

Every month a day is earmarked when the sewadal collects the contributed food grains and the same is cooked as per requirement every week and served as Langar Prasad not only to the underprivileged, but the same food is served to the sewadal as well. The Mission in no means discriminates in terms of food. The food is prepared in-house at the Ashram by the sewadal while maintaining best hygiene levels and served with utmost love to one and all.

The Langar sewa is held every Sunday at Faridabad. Just to share an overview of the quantum of langar prasad that is prepared and served at the mission:

- 4 weeks of 'Guru Ka Langar' (Monthly Langar)
- Feeds over 10,000 people
- Rice – 622 Kg
- Wheat Flour – 160Kg
- Pulses – 334 Kg
- Assorted Vegetables – 103 Kg
- Milk for Tea/Chhabeel – 100 Ltr
- Roohafza – 40 bottles
- Sugar – 75 Kg
- Water (Cleaning, cooking, drinking etc.) – 2000 Ltr.
- Packed Items (Biscuits, wafers, toffees, etc.) – 3894 packets/pcs.
- Manhours – 12 hours per day
- Working Hands (Sewadal) – 20-25 volunteers each day

Apart from serving Langar Prasad as a sewa to feed people and ensure people sleep on full stomach what keeps the sewadal motivated is the trust that the people and kids of that area have on the mission. For them Sunday is the best day of the week and they wait for the mission sewadal to reach the location with home cooked, healthy food. It is the love for humanity that the mission continues its langar sewa even in difficult weather conditions.

The concept of Langar is to provide food to everyone in need irrespective of their caste, class, religion and gender. The entire process of Langar sewa, i.e., from contribution to collection of food grains, vegetables, etc., ensuring cleanliness and hygiene of the place where the langar is to be prepared, cutting/chopping of vegetables, kneading the dough, preparation of the meals, its distribution and thereafter cleaning the place where the langar is served, is all managed inhouse. This broadly indicates the idea of a selfless-service for others in the Sadhsangat (community). Upholding the virtue of sameness of all human beings, Guru Ka Langar has served our community in many ways. It has not only involved the entire sewadal but has also ensured active participation of all genders of all age groups in this task of service for mankind. This regular langar sewa ensures that our future generation follow the path of serving humanity, understand the spirit of sewa and spirituality, oneness and belongingness, and their responsibility towards the society. We at The Divine Mission believe in remaining familiar with our belief, culture and tradition while we adapt to the modernized future.

महिलाओं का स्वास्थ्य और कल्याण, उनको सशक्त बनाने की और एक कदम है

महिलाएं समाज का एक अभिन्न अंग हैं इसलिए महिलाओं की चिंता सभी को होनी चाहिए। भारत में महिलाओं की स्वच्छता एक ऐसा मुद्दा है जिसे अभी भी मेनस्ट्रीम में डिसकस करने से लोग कतराते हैं। हम में से कई शहरी महिलाओं के लिए, मासिक धर्म नियमित परेशानी से जुड़ा हुआ है, जिसे हम किशोरावस्था से जनरल डिस्कम्फर्ट के रूप में प्रबंधित करना सीखते हैं। सैनिटरी नैपकिन तक हमारी पहुंच और स्वच्छ मासिक धर्म प्रथाओं के बारे में जागरूकता सुनिश्चित करती है कि हमारे मासिक चक्र का हमारे व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन पर बहुत कम प्रभाव पड़े।

हालाँकि, हमारे देश में हर लड़की या महिला उतनी धन्य नहीं है। मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन सुविधाओं की कमी के कारण भारत में लगभग 23 मिलियन लड़कियां हर साल स्कूल छोड़ देती हैं, जिसमें सैनिटरी नैपकिन तक पहुंच, मासिक धर्म के बारे में जागरूकता और बहते पानी और निपटान सुविधाओं के साथ स्वच्छ शौचालय तक पहुँचने जैसी समस्याएं शामिल है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (2019-21) के जारी पांचवें दौर के अनुसार, महिलाओं (15-24 वर्ष की आयु) में सुरक्षा के अस्वच्छ मासिक धर्म के तरीकों का उपयोग उनके शहरी समकक्षों की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक है। बिना स्कूली शिक्षा वाली समान आयु वर्ग की महिलाओं में अस्वच्छ तरीके का उपयोग करने की संभावना लगभग छह गुना अधिक होती है। और सबसे गरीब वर्ग के लोगों के अस्वास्थ्यकर तरीके का उपयोग करने की संभावना दस गुना अधिक है।

मासिक धर्म उत्पादों के अस्वच्छ उपयोग से युवा लड़कियों और महिलाओं में फंगल इन्फेक्शन के संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है, जिससे उनके समग्र स्वास्थ्य और कल्याण पर असर पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक है कि लड़कियों और युवतियों को मासिक धर्म की सटीक वैज्ञानिक जानकारी और स्वास्थ्यकर प्रथाओं तक पहुंच हो। इस मुद्दे को अत्यधिक महत्व देते हुए, द डिवाइन मिशन, वंचित महिलाओं को नियमित रूप से सैनिटरी पैड, इंटिमेट वॉश, सुरक्षित मल्टी-विटामिन की गोलियां वितरित करता है। वितरण के साथ-साथ महिलाओं को सैनिटरी पैड का उपयोग करने के लाभ, समय पर पैड बदलने की ज़रूरत, उनका उचित निपटान और एक आरामदायक मासिक धर्म से जुड़ी हर चीज के बारे में बताया जाता है।

द डिवाइन मिशन में गुरुजी हमेशा मासिक धर्म से जुड़े मिथकों और इसके के दौरान महिलाओं पर लगाए गए प्रतिबंधों पर काफी मुखर रहे हैं। वह स्पष्ट रूप से कहते हैं कि महिलाओं के स्वस्थ रहने के लिए यह एक सामान्य मेडिकल संकेत है। यह एक वरदान है जो महिलाओं को एक नए जीव को इस दुनिया में लाने के सक्षम बनाता है। वह दृढ़ता से सुझाव देते हैं कि इन दिनों महिलाओं को अपवित्र मानने के बजाय, महिलाओं को अतिरिक्त देखभाल और आराम दिया जाना चाहिए ताकि उनके मासिक धर्म के कारण उनके दिन-प्रतिदिन के कामकाज में बाधा न आए।

गुरुजी इस बात पर जोर देते हैं कि महिलाओं को अपनी अच्छी देखभाल करनी चाहिए, नियमित चिकित्सा जांच के लिए जाना चाहिए और साल भर अच्छा पोषण लेना चाहिए क्योंकि वे न केवल समाज का अभिन्न अंग हैं, वे एक परिवार के सबसे मजबूत स्तंभ हैं और उनके बिना बहुत से लोगों के लिए एक आरामदायक जीवन असंभव है।

सैनिटरी आवश्यक वस्तुओं का वितरण मिशन द्वारा वर्ष भर की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण गतिविधियों में से एक है। द डिवाइन मिशन के इस पहल की कई संगठनों और मीडिया ने भी सराहना की है।

Upcoming Events

Guru Ka Langar	December 04, 11, 18, 25; 2022
New Year Satsang	January 01, 2023
Divine Premier League	January 26, 2023 (Tentative)
Satsang	Every Sunday

Kids Corner

You cannot please everyone

Guruji often narrates this story, which is a great learning if understood well.

The story is:

A Man and his son were once going with their Donkey to market. As they were walking along by its side a countryman passed them and said: "You fools, what is a Donkey for but to ride upon?"

So the Man put the Boy on the Donkey and they went on their way. But soon they passed a group of men, one of whom said: "See that lazy youngster, he lets his father walk while he rides."

So the Man ordered his Boy to get off, and got on himself. But they hadn't gone far when they passed two women, one of whom said to the other: "Shame on that lazy lout to let his poor little son trudge along."

Well, the Man didn't know what to do, but at last he took his Boy up before him on the Donkey. By this time they had come to the town, and the passers-by began to jeer and point at them. The Man stopped and asked what they were scoffing at.

The men said: "Aren't you ashamed of yourself for overloading that poor donkey of yours and your hulking son?"

The Man and Boy got off and tried to think what to do. They thought and thought, till at last they cut down a pole, tied the donkey's feet to it, and raised the pole and the donkey to their shoulders. They went along amid the laughter of all who met them till they came to Market Bridge, when the Donkey, getting one of his feet loose, kicked out and caused the Boy to drop his end of the pole. In the struggle the Donkey fell over the bridge, and his fore-feet being tied together he was drowned.

"That will teach you," said an old man who had followed them:
"Please all, and you will please none."

Guruji's Lesson: *So, like the donkey finally loses his life, if you listen to people too much you might end up in the same way. Don't bother what others say, because there are millions of others, and they have their own minds and everybody will say something; everybody has their opinions and if you listen to opinions and try to modify your actions accordingly, you will end up in a mess. Listen to everyone but do what your mind and heart says. Listening to others, following what others say, doing as they say would always leave you unsatisfied and you will never be able to reach your innermost centre.*

नित नियम

हे सतगुरु, हे अंतर्यामी, हे भगवन, हे परमेश्वर !
हमको दे दो ज्ञान ये अपना, आन खड़ा तेरे दर पर
हमको दे दो ध्यान ये अपना, दे दो भक्ति दान हे सतगुरु
तन मन धन की सेवा दे दो, हो ना कभी अभिमान हे सतगुरु।

तेरी शरण में आया सतगुरु, बना रहूँ तेरा दास सदा
तेरी भक्ति, तेरा सिमरन करूँ मैं हर एक स्वाँस सदा।

तन मन धन है तेरा सतगुरु, सुख पाऊँ हर पल सदा
तेरी पूजा, तेरी भक्ति, तुझपे ही विश्वास सदा।

हर पल देखूँ सतगुरु तुझको, जब तक तन में प्राण सदा
तेरे गुण में गाऊँ सतगुरु, ऐसा हो मेरा ध्यान सदा।

तेरी कृपा के गुण गाऊँ, बनके सेवादार सदा
तेरी मूरत, तेरी सूरत, देखूँ जाननहार सदा।

तेरी रेहमत से मैं पाऊँ, हरदम हर्ष उल्लास सदा
जब जब भी मैं आऊँ जग में, तेरा ही हो साथ सदा।

दास रहूँ तेरे दासों का मैं, ऐसा दो वरदान सदा
मैं और मेरा करूँ कभी ना, बना रहूँ तेरा दास सदा।

हे सतगुरु, हे अंतर्यामी, हे भगवन, हे परमेश्वर !
हमको दे दो ज्ञान ये अपना, आन खड़ा तेरे दर पर।

सिमरन

हे परमपिता परमात्मा,
हम आपके बच्चे हैं, आपकी शरण में हैं,
कृपया हमें बख्श दें, और अंग संग होकर हमारी सहायता करें।

हो सकता है हमसे, हमारे परिवार से, हमारे पूर्वजों से,
जाने अनजाने में, कोई भी गलती हो गयी हो,
उसकी हमें माफी दें, और अंग संग होकर हमारी सहायता करें।

Experience Sharing

मैं तो सोच-सोच के हारा, तेरिया तू जान मालका

Nalini Mehra

Guruji plays a very important role in my life. Guruji's teachings and preachings have not only aided my spiritual journey but following the path he shows, has added meaning to my life. We met Guruji in one of the functions that was held on November 23, 2019. Seeing him that day made us realise that Guruji is a very simple, grounded human being and moreover unlike other Babas, he doesn't have a peculiar type of dressing or a rigid system one needs to follow. He is accessible and for him every disciple holds equal significance.

After meeting Guruji, my perception of looking at things has changed to a great extent. We started visiting Guru Ghar every Sunday where we have inculcated the habit of selfless sewa, serving humanity with तन, मन, धन की सेवा. We have also realised the power of Simran which now has become an essential part of our daily routine, i.e., Remembering, thanking and apologising from the supreme power.

Last year in one of the Sangat, Guruji blessed us and mentioned that we will soon buy our own house. We stayed in a rented accommodation and though we wanted to buy a house of our own, we were short of finances and so hearing this from Guruji, me and my husband were surprised and in a state of dilemma. Guruji not only said that we will have our own house but he also quoted the figures of the deal and described the flat that would be ours soon.

While all of this seemed like a distant dream, but within weeks things started to unfold in this direction and within a month we were offered a good deal for a house similar to what Guruji had described and the amount that got finalised was the same that Guruji mentioned. We mentioned the same to Guruji and told him that we had no clue how to go about arranging the funds. Guruji blessed us and gradually as per Guruji's plan, we managed to collect enough funds to buy the flat. 'Having my own house when we least expected' is the biggest surprise and miracle that Guruji made possible. Without the blessings of Guruji, nothing could have been possible.

"मैं तो सोच-सोच के हारा, तेरिया तू जान मालका"

Thank You Guruji for realising our dream, thank you for everything you have blessed us with.

हाथ नहीं छोड़ना, साथ नहीं छोड़ना
इतनी कृपा गुरूजी बनाए रखना
मरते दम तक सेवा में लगाए रखना
शुक्राना गुरूजी, जय गुरूजी

Write to us, share your experiences, feedback, ideas for Divine Vichaar on
mission.divinevichar@gmail.com | Whatsapp us at +(91)-9212135112

THE DIVINE MISSION
Contributing Towards Humanity

The Divine Mission

Contributing Towards Humanity

283, Sector - 45, Faridabad, Haryana - 121003, Ph.: 9212135112

Follow us on Social Media

/thedivinemission.org/ thedivinemission/
/channel/UCksmTgvAq8h8c0gc44sCV0Q
/thedivinemission.org/

Scan QR Code

OR

VPA (Virtual Payment Address)/ UPI ID
thedivinemission@yesbank

Copyright Disclaimer: All rights reserved. No part of the newsletter may be reproduced or copied in any form or by any means (graphic, electronic or mechanical, including photocopying, image duplication or information retrieval systems) or reproduced on any drive, tape, perforated media or other information storage device, etc., without the explicit written permission of the editor. Breach of the condition is liable for legal action.